प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कार्डियक वैस्कुलर थोरेसिक सर्जरी विभाग में एक दुर्लभ शल्य क्रिया को करते हुए विभाग के चिकित्सको ने एक नया आयाम हासिल करते हुए मरीज की जान बचाई। मरीज सुशीला, उम्र-35 वर्ष, लखनऊ को विभाग में Aortic valve replacement हेतु दिनांक 28 अप्रैल, 2018 को कार्डियोलाॅजी विभाग से रेफर किया गया था। जिसका शल्य क्रिया एक सप्ताह पूर्व किया गया है। मरीज को जब 7 जून को शल्य क्रिया के दौरान हार्ट लंग मशीन पर डाला गया और और उसकी शल्य क्रिया प्रारम्भ की गई तो पता चला कि मरीज को । Ascending aortic dissection नामक समस्या है। जिसमें महाधमनी की तीन लेयरों मे से सबसे अंदर की लेयर इंटीमा अलग हो गई थी जिसकी वजह से रक्त का प्रवाह मुख्य नस में न होकर एंटीमा और मीडिया के बीच से होने लगता है। और इसकी वजह से मरीज के विभिन्न अंगो में रक्त प्रवाह बाधित हो जाता है। यह एक आपातकालीन समय था जहां पर मरीज को सर्कुलेटरी अरेस्ट के साथ डीप हाइपोथर्मिया की अवश्यकता थी। जिसमें मरीज के शरीर के तापमान को 18 डिग्री सेल्सीयस तक ले जाया जाता है। इस अवस्था मे मरीज के सेल्स अपने अंदर मौजूद रक्त से ही जीवित रहते है। उपरोक्त सर्जरी में मरीज के वाल्व को रिपेयर करने के लिए डेकराॅन पैच का इस्तेमाल किया गया जिसकी किमत लगभग 10 हजार होती है। जबकी इस बीमारी में प्रयोग होने वाले वैस्कुलर प्रोस्थेटिक ग्राफ्ट की किमत करीब 1.5 लाख रूपये होती है। अतः उपरोक्त सर्जरी में कम लागत के साथ ही साथ मरीज के Aortic valve को भी बचा लिया गया। उपरोक्त शल्य क्रिया डाॅ0 अम्बरीश कुमार, सह-आचार्य सीवीटीएस विभाग के नेतृत्व में डाॅ0 शैलेन्द्र कुमार, डाॅ0 विकास, डाॅ0 अजयंद एवं निश्चेतना विभाग से डाॅ0 दिनेश कौशल, डाॅ0 अंजन, डाॅ0 भारतेष, डाॅ आरीफ, डाॅ0 अंचल एवं परफ्यूजनिस्ट श्री मनोज श्रीवास्तव के दल द्वारा किया गया। उपरोक्त समस्या एक लाख व्यक्तियों में से किसी तीन को होती है। यह अत्यंत ही दुर्लभ केस है। इस प्रकार की सर्जरी यू0पी0 में पहली बार की गई।

प्रारंभ में मरीज को लाॅरी कार्डियोलाॅजी विभाग मे श्वांस फूलने, खाॅसी और सिने मे दर्द की समस्या के लिए लाया गया था। जहा पर इको में यह पाया गया की मरीज को वाॅल्व की समस्या है इसलिए कार्डियोलाॅजी विभाग से मरीज को सीवीटीएस विभाग रेफर किया गया।